 ISBN No.-978-81-927095-2-9

"Education through self-help is our motto." – Karmaveer

43

Rayat Shikshan Sanstha's

Arts, Science and Commerce College, Ramanandnagar (Burli)

Tal: Palus, Dist: Sangli, Pin: 416 308 (MS)
(Affiliatad to Shivaji University ,Kolhapur)
Reaccredited 'A' grade(CGPA 3.09)
Phone (O): 02346/ 222035
Email:ascc_vnagar@ymail.com

NATIONAL SEMINAR

ON

DECCAN THROUGH THE AGES

(8th & 9th October 2015)

Sponsored by

University Grants Commission, New Delhi

Organized by

Department of History,

Arts, Science and Commerce College, Ramanandnagar.

PROCEEDING

EDITORIAL BORD

Chief Organizer

Prin. Dr. S. D. Kamble

Arts, Science and Commerce College, Ramanandnagar(Burli)

Prof. S. S. Marakwad
Co- Convener
History Dept.

Prof. R. R. Sonawale
Chief Editor & Convener
HOD, History Dept.

Prof. L. A. Gauddab
Co-Convener
History Dept.

 ISBN No.-978-81-927095-2-9

कोल्हापुर की सांस्कृतिक धरोहर : श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ

डॉ. खोले सुप्रिया चंद्रशेखर
इतिहास विभाग,
चंद्राबाई—शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज हुपरी ,
तालुका — हातकणंगले जि. कोल्हापुर
मोबा. ९८२३९७८९९५

प्रस्तावना :

कोल्हापुर को भारत की दक्षिण काशी कहा जाता है । भारतीय संस्कृति की अनेक विशेषताओं को उजागर करनेवाला कोल्हापुर पुरातन काल से धार्मिक तीर्थक्षेत्र के रुप में मशहूर है। यहाँ विभिन्न धर्म के मंदिर,मश्जिद,गिरिजाघर आदी स्थित है जो ततसंबंधी धर्म की धरोहर संभालने का कार्य कर रहे है । कोल्हापुर में मध्ययुग में स्थापित 'श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ' ऐसा ही एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है । यह जैन धर्म का केंद्र जरूर है साथ ही कोल्हापुर की सांस्कृतिक विरासत का निर्वाह करने में इसका योगदान अत्यंत सराहनीय है ।

संदर्भ साहित्य :

कोल्हापुर जिले का गजेटियर, विश्वकोश में उपलब्ध उल्लेख, श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ से संबंधित प्रकाशित लेख, मठ के द्वारा प्रकाशित परिचय पत्रिका और मासिक पत्रिका, जैन विद्वानोंद्वारा प्रकाशित पुस्तकें, कोल्हापुर शहर की जानकारी देने वाले लेखांक, प्रत्यक्ष मुलाकात, इंटरनेट से मिली जानकारी आदि का उपयोग इस शोध निबंध के लिए किया गया है।

कोल्हापुर शहर का तीर्थक्षेत्र के रुप में महत्त्व :

कोल्हापुर में हुए उत्खनन, संशोधन और महत्त्वपूर्ण पौराणिक ग्रंथ जैसे 'करवीर महात्म्य', 'हरिवंश' आदि को देखते हुए इस शहर का इतिहास इसापूर्व तीसरे शतक तक पहूँचता है । 'करवीर क्षेत्र' नाम से परिचित यह शहर आज भी 'दक्षिण काशी' कहलाता है । प्राचीन काल में सातवाहन, कदंब, वाकाटक, पूर्वकालीन राष्ट्रकुट, उत्तरकालीन राष्ट्रकुट, कल्याणी के चालुक्य, बदामी के चालुक्य, शिलाहार, देवगिरी के यादव आदि राजघराणोंने यहाँ शासन किया । उत्तरकालीन राष्ट्रकुटों के दौरान अंबाबाई का मंदिर पुर्णावस्था में पहुँच गया । यहाँ की पुरानी बस्तीयाँ य जैसे ब्रम्हपूरी, उत्तरेश्वर, खोलखंडोबा, रंकाळा, पद्माळा,रावणेश्वर इन सबके बीचोबीच यह मंदिर बनवाया गया है ।[1] हिंदू धर्म में देवियों के शक्तिपीठों का बहुत महत्त्व है। महाराष्ट्र में साढेतीन शक्तिपीठ है, जिसमें से कोल्हापुर की अंबाबाई पूर्ण पीठ है। देवी का मतलब होता है 'माता' और इसी कारण पुराने महानुभव ग्रंथ में कोल्हापुर का उल्लेख 'मातापुर' ऐसा भी किया है । देवीमाता के भक्त पूरे भारत में फैले हुए हैं। अंबाबाई के साथ अन्य देवी देवताओं के मंदिर, तीर्थ (जैसे कपिलतीर्थ, वरुणतीर्थ आदि) यहाँ स्थित है, इसलिए इस शहर का धार्मिक महत्त्व और भी बढ गया है । इसी कारण कोल्हापुर का नागरिकीकरण बहुत जल्दी हो गया ।[3]

लेखकों के ग्रंथ यहाँ सुचारु रूपसे रखे गए हैं, जिनका उपयोग सभी धर्म के लोग कर रहे है । [११] इस अमूल्य ग्रंथ भंडार में एक ग्रंथ है 'प्रतिष्ठा– विधान–यन्त्रादि'। यह सचित्र ग्रंथ है, जो हस्तलिखित है, जिसमें विविध प्रकार के चित्र दिए हुए हैं, जो जैन धर्म में किए जानेवाले विविध विधि मंत्र क्रियाओं के बारे में जानकारी देते हैं । कन्नड भाषा में लिखा हुआ यह ग्रंथ लगभग बारह सौ साल पुराना है । इसमें गद्य और पद्य में विवरण दिए गए है । ८५८ पृष्ठों का यह ग्रंथ इस ग्रंथालय का सबसे अमूल्य ग्रंथ है ।[१२] यहाँ के ग्रंथों का भाषांतर होना और जनसामान्य के लिए इसका इस्तेमाल होना अत्यंत आवश्यक है।

२) मानस्तंभ : मानस्तंभ यह जैन स्थापत्य कला की एक विशेषता है, जिसे देखकर आदमी का अहंभाव कम हो जाता है । ऐसा मानस्तंभ लगभग हर जिनमंदिर होता है। श्री लक्ष्मीसेन मठ के विशाल प्रांगण में भगवान चंद्रप्रभ मंदिर के सामने दि. २४ मार्च १९८३ को ४१ फिट ऊँचे, अखंडित ग्रैनाईट के पत्थर में बनाए हुए मानस्तंभ की प्रतिष्ठापना की गई ।[१३] इस मानस्तंभ का अखंडीत ग्रैनाईट का पत्थर १९७८ में मद्रास प्रांत के मुहतुर गाँव में मिला, जिसे कोल्हापुर में लाया गया और उसपर शिल्पसंस्कार किए गए । भ. चंद्रप्रभ का चतुर्मुख जिनबिंब इसमें प्रतिबिंबित है । इसके साथ– साथ तीर्थंकर माताओं के १६ सपने भी इसपर चित्रित किए गए है । यह कलापूर्ण, मनोहारी, अखंडित मानस्तंभ अब मठ की स्थापत्य विशेषता बन गया है ।[१४]

३) मठ में स्थापित विविध प्रतिमाएँ:

अ) भगवान आदिनाथ– भगवान १००८ श्री आदिनाथ (वृषभनाथ) की सफेद संगमरमर की २८ फीट ऊँची प्रतिमा कोलकता के निवासी श्री पारसमल कासलिवाल ने १९५९ में प्रदान की। १९६२ में बडे वैभव के साथ इसकी पंचकल्याण प्रतिष्ठा की गई ।[१५] यह पंचकल्याण पूजा आचार्य श्री १०८ देशभूषण मुनी महाराज के नेतृत्व में और कोल्हापुर के तत्कालीन महाराज छत्रपति शहाजीराजे की उपस्थिति में संपन्न हो गई, जिसे आज भी याद किया जाता है ।[१६] इस प्रतिमा का हर साल मई महीने में वार्षिक महोत्सव संपन्न होता है।

ब) भगवान पार्श्वनाथ– मठ में भगवान पार्श्वनाथ की अमृत शिलामय अष्ट प्रतिहार्य सहित मनोज्ञ प्रतिमा भी है। इसमें छत्रत्रय, चामरधारी, सिंहासन, अशोकवृक्ष, देवदुंदुभी, पुष्पवृष्टी, भावमंडल, दिव्यध्वनि ये आठ लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । यह अनोखी बात है और बहुत दुर्लभ भी है ।[१७]

क) भगवान चंद्रप्रभ की प्राचीन प्रतिमा– भगवान चंद्रप्रभ की प्राचीन प्रतिमा भी यहाँ है। जिसपर यक्ष–यक्षिणी अंकित किए गए हैं । ये यक्ष–यक्षिणी भगवान चंद्रप्रभ की रक्षक देवताँए हैं, जो शस्त्रसहित हैं ।

ड) ज्वालामालिनी– जैन धर्मप्रतीकों मे सबसे वैशिष्टपूर्ण है यक्ष–यक्षिणी। सारे तीर्थंकरों की रक्षा करनेवाली देवी और देवताओं को यक्ष–यक्षिणी कहा जाता है। ज्वालामालिनी यह भगवान चंद्रप्रभ तीर्थंकर की यक्षिणी है, जिसका अलग मंदिर मठ के विशाल प्रांगण में स्थापित है, जो पश्चिमाभिमुख है । कोल्हापुर की प्रसिद्ध देवता अंबाबाई के मंदिर की तरह यहाँ भी साल में दो बार सूर्य की किरणे ज्वालामालिनी का चरण छूती है । इस प्रतिमा की हर इतवार को विशेष रूप से पूजा होती है ।[१८]

संदर्भ

१. जोशी लक्ष्मणशास्त्री (संपा), *विश्वकोश खंड ४*, महाराष्ट्र राज्य मराठी विश्वकोश
२. निर्मिती मंडळ,मुंबई १९७६,पृ. ३७०.
३. कोल्हापुर जिल्हा गॅजेटियर, १९८९, पृ. ३३.
४. निकम राजश्री, न्तइंदपेंजपवद पद ।दबपमदज डींतीजतं, नाग नालंदा पब्लीकेशन इस्लामपूर, २०१२, पृ. ११२. संगवे विलास,*जैन संस्कृती— परंपरा व प्रभाव* ,अनेकांत शोधपीठ,बाहुबली. १९९१,पृ. १९९.
५. WWW. Kolhapur Gazetteer,1876-
६. रिट्टी श्रीनिवास,करवीरकर अनंत(संपा.), *scriptions from Kolhapur District* प्रसारग कन्नड युनिव्हर्सिटी, हम्पी, २०००
७. संगवे १९९१, उपरोक्त , पृ. १९९.वही, पृ. २६६,२६७.संगवे
८. विलास (लेख),लक्ष्मीसेन भट्टारक पीठ परंपरा व कार्य — ऐतिहासिक
९. पार्श्वभूमी, रत्नत्रय रौप्यमहोत्सवी विशेषांक, संपा. जैन सुमेरचंद. फेब्रु. १९९८, पृ. ९२.
१०. परिचय पुस्तिका महास्वामी श्री लक्ष्मीसेन जैन मठ कोल्हापुर,श्री लक्ष्मीसेन दिगंबर जैन ग्रंथमाला, कोल्हापुर, पुष्प—६६,२००९,पृ. ०६.
११. दै. पुढारी, कोल्हापुर एडिशन,१३ अक्तुबर, २०११.
१२. मुलाकात,प. पू. लक्ष्मीसेन भट्टारकरत्न पट्टाचार्य महास्वामीजी, कोल्हापुर,५ अक्तुबर २०१५.
१३. परिचयपुस्तिका, उपरोक्त , पृ. ०७.
१४. संगवे १९९१, उपरोक्त , पृ. २६९.
१५. परिचयपुस्तिका, उपरोक्त ,पृ. ०३.
१६. संगवे , १९९१, उपरोक्त , पृ. २६९.
१७. मुलाकात, उपरोक्त
१८. वही
१९. मिश्र जनार्दन ,*भारतीय प्रतीक विद्या*, राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, बिहार, १९५९,पृ. २४८.
२०. मुलाकात, उपरोक्त
२१. हेरवाडे श्रीधर (संपा),प. पू. पट्टाचार्य भट्टारकरत्न स्वस्तिश्री महास्वामीजी षष्ट्यब्दी पूर्ती गौरव अंक, कोल्हापुर, २००३,पृ. ०१.
२२. परिचय पुस्तिका, उपरोक्त, पृ. ५,६

ज्ञान-विज्ञानं विमुक्तये
University Grants Commission

"Education Through Self-help is our Motto." – Karmaveer

Rayat Shikshan Sanstha's

Arts, Science and Commerce College, Ramanandnagar (Burli)

Kirloskarwadi, Tal: Palus, Dist-Sangli- 416308 (Maharashtra)

Reaccredited with 'A' Grade by NAAC

organizes

UGC

sponsored

Two Day National Seminar in History

on

Deccan Through the Ages

(October 8 and 9, 2015)

Certificate

This is to certify that Prof./ Dr./ Shri./ ~~Smt.~~ Dr. Khole Supriya C. of C. S Shendure College Hupari attended as paper presenter at Two Day National Seminar on the theme of **Deccan Through the Ages** organized by the Department of History in Arts, Science and Commerce College, Ramanandnagar (Burli) on October 8 and 9, 2015. The title of his/ her paper was cultural Dharohar of Kolhapur: shri Laxmisen jain math

Prof. S. S. Marakwad
Coordinator

Prof. R. R. Sonawale
Convener

Prin. Dr. S. D. Kamble
Principal
A. S. C. College, Ramanandnagar (Burli)